Date
29/04/2020

विषय - समकालीन भारत और शिक्षा
UNIT-6th
प्रकरण - 'शिक्षा का व्यापारीकरण'

B.Ed. Ist Year

व्यापारीकरण के कारण ⇒

3.) उच्च शिक्षा मे सरकारी खर्च में कमी :- गत वर्ष के आंकडे "उच्च शिक्षा मे सरकारी खर्च मे कमी" को दर्शाते है। कोठारी आयोग ने जो 6% GDP के लक्ष्य की सिफारिश की थी उसे आज तक भी प्राप्त नही किया जा सका। 2011-2012 मे उच्च शिक्षा पर जो व्यय किया जा रहा है वह मात्र 4.17% है। जिसका कारण राजनीतिक सोच मे कमी है।

4.) निजी संस्थानो मे अनियमित वृद्धि :- आँकडे सन् 2008 से 2012 तक यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते है कि निजी संस्थाओ मे वृद्धि किस गति से हो रही है।

(Table)

Year	Central universities	State univ.	Deemed univ.	State Private univ.	Colleges
2008	25	228	103	14	23,206
2009	40	231	128	21	25,951
2010	42	256	130	60	31,324
2011	43	297	129	10	33,023
2012	44	306	129	154	35,539

Source UGC Annual Report

5.) भारत मे FEP's की वृद्धि :- भारत मे विभिन्न स्त्रोतो के माध्यम से विदेशी शिक्षा दिलाने वाले स्त्रोतो का 2005 से 2010 तक का विवरण (% मे) निम्न तालिका मे दर्शाया गया है।

P.T.O

Type of FFP	Total Number		
	2005	2006	2010
A. Respective Home Campuses	237	504	440
B. In India-own Campuses	02	0	04
C. Programmatic Collaboration	15	32	60
D. Twinning Programe	20	27	54
E. other than Twinning	–	–	77
Total	364	563	635

Note - Source AIU Project Report, 2012

6] कमजोर एवं असक्षम नियामक ढाँचा :- भारत मे उच्च शिक्षा से सम्बन्धित ढाँचा अत्यन्त कमजोर, असक्षम एवं संसाधनो के अभाव से प्रभावित है। अधिकांश कार्यकारी निकायो की नौकरशाही, भाई भतीजावाद व भ्रष्टाचार सम्बन्धी गम्भीर चुनौतीयो का सामना करना पडता है। इन नियामक निकायो ने उच्च शिक्षा से सम्बन्धित निजी क्षेत्र मे कार्य करने वाले लोगो के प्रति नकारात्मक धारणा बना रखी है, तथा वे स्वंय को इनका नियन्त्रक मान बैठे है।

शिक्षा के व्यापारीकरण के परिणाम :-

1] निजी शिक्षा संस्थाओ की फीस अधिक होने के कारण शिक्षा महंगी होती जा रही है जो निम्न वर्ग तो दूर मध्यम वर्ग की पहुँच मे भी नही रही।

2] उदारतापूर्वक मान्यता दिए जाने पर निजी संस्थाओ मे बहुत अधिक बढोत्तरी हो रही है।

3] इन संस्थाओ मे फीस की अधिकता व शिक्षा की गुणवत्ता का अभाव रहता है।

4] निजी संस्थाएँ नियमो, शर्तो, मानदण्डो, को अनदेखा कर व्यक्तिगत हितो को पूरा करने मे लगी रहती है।

5] योग्य शिक्षको को वेतनमान के अनुसार पूरा वेतन नही दिया जाता है।

6] इन संस्थाओ के निरीक्षण, पर्यवेक्षण और नियन्त्रण का कार्य कई सरकारी विभागो पर होता है व वे

P.T.O.

- अधिकारी बिना चढ़ावे कोई कार्य पूरा नहीं करते, जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

* शिक्षा के व्यापारीकरण का सकारात्मक पक्ष :-

1) निजी विद्यालय आसानी से उपलब्ध एवं पहुँच में हैं।
2) निजी विद्यालय बेहतर शिक्षा उपलब्ध कराते हैं।
3) निजी विद्यालय बच्चों के अभिभावकों के प्रति अधिक जवाबदेह होते हैं।
4) निजी विद्यालय अंग्रेजी माध्यम से भी बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराते हैं।
5) निजी विद्यालय बच्चों को उच्च शैक्षिक तकनीकी के द्वारा शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करते हैं।

* शिक्षा के व्यापारीकरण का नकारात्मक पक्ष :-

1) निजी विद्यालय कैपीटेशन फीस वसूल करते हैं।
2) अतिरिक्त फीस वसूल करते हैं।
3) निजी विद्यालयों में बालकों का शोषण किया जाता है।
4) निजी विद्यालयों में शिक्षकों का भी शोषण किया जाता है।
5) बाहरी दिखावट व प्रचार अधिक होता है।
6) निजी विद्यालयों का मुख्य उद्देश्य लाभ प्राप्त करना ही है।

* शिक्षा के व्यापारीकरण पर नियन्त्रण :- शिक्षा में व्यापारीकरण की प्रवृत्ति को नियन्त्रित एवं समाप्त करने के लिए निम्न उपाय किए जाने चाहिए -

1) मान्यता सम्बन्धी नियमों पर सख्ती से अमल किया जाना चाहिए।
2) मासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक शुल्क का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाना चाहिए। अतिरिक्त फीस लेने वाले विद्यालयों की मान्यता रद्द कर दी जानी चाहिए।
3) N.C.E.R.T. की पुस्तकें ही पाठ्यक्रम में रखनी चाहिए।
4) योग्य, प्रतिभाशाली, प्रशिक्षित शिक्षकों को ही नियुक्त किया जाना चाहिए, जिनको सरकार द्वारा निर्धारित वेतनमान दिए जाने चाहिए।
5) विद्यालय और शिक्षा विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए सरकार को कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए।

Complete

Siddhi Tyagi
29/04/2020

Scanned with CamScanner